कुमार जीवन - 11

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ आज कुमारों की भट्ठी का आरम्भ है ना। भट्ठी का आरम्भ अर्थात् पकने का आरम्भ। कोई स्वाहा होगा, कोई भट्ठी में पकेगा, कोई प्योरिटी का संकल्प दृढ़ करेगा। यहाँ तो करने लिए ही आये हो ना। अब देखना है कि जो कहा वह किया?

➳ _ ➳ यह जो ग्रुप है वह पूरा **माया से इनोसेन्ट और ज्ञान से सेन्ट** बनकर जाना। जैसे सतयुगी आत्मायें जब यहाँ आती हैं तो विकारों की बातों की नालेज से इनोसेन्ट होती हैं। देखा है ना। अपना याद आता है कि जब हम आत्मायें सतयुग में थीं तो क्या थीं। माया की नालेज से इनोसेन्ट थीं-याद आता है? अपने वह संस्कार स्मृति में आते हैं वा सुना हुआ है इसलिए समझते हो? **जैसे अपने इस जन्म में बचपन की बातें स्पष्ट स्मृति में आती हैं, वैसे ही जो कल के आप के संस्कार थे वह कल के संस्कार आज के जीवन में संस्कारों के समान स्पष्ट स्मृति में आते हैं वा स्मृति में लाना पड़ता है।** जो समझते हैं कि हमारे सतयुगी संस्कार ऐसे ही मुझे स्पष्ट स्मृति में आते हैं जैसे इस जीवन के बचपन के संस्कार स्पष्ट स्मृति में आते हैं, वह हाथ उठाओ। यह स्पष्ट स्मृति में आना चाहिए।

➳ _ ➳ साकार रूप में (ब्रह्मा बाबा में) स्पष्ट स्मृति में थे ना। **यह स्मृति तब होगी जब अपने आत्मिक-स्वरूप की स्मृति स्पष्ट और सदा काल रहेगी। तो फिर यह स्मृति भी स्पष्ट और सदाकाल रहेगी।** अभी आत्मिक स्थिति की स्मृति कब-कब देह के पर्दे के अन्दर छिप जाती है। इसलिए यह स्मृति भी पर्दे के अन्दर दिखाई देती है, स्पष्ट नहीं दिखाई देती है। आत्मिक-स्मृति स्पष्ट और बहुत समय रहने से अपना भविष्य वर्सा अथवा अपने भविष्य के संस्कार स्वरूप में सामने आयेंगे।

➳ _ ➳ आपने चित्र में क्या दिखाया है? **एक तरफ विकार भागते, दूसरी तरफ बुद्धि की स्मृति बाप और भविष्य प्राप्ति की तरफ।** यह लक्ष्मीनारा यण का चित्र दिखाया है ना। यह चित्र किसके लिए बनाया है? दूसरों के लिए या अपनी स्थिति के लिए? तो भविष्य संस्कारों को स्पष्ट स्मृति में लाने के लिए आत्मिक स्वरूप की स्मृति सदा काल और स्पष्ट रहे। जैसे यह देह स्पष्ट दिखाई देती है वैसे अपनी आत्मा का स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे अर्थात् अनुभव में आये।

➳ _ ➳ तो अब कुमारों को क्या करना है? **सेन्ट भी बनना है, इनोसेन्ट भी बनना है।** सहज पढ़ाई है ना। दो शब्द में आपका पूरा कोर्स हो जायेगा। यह छाप लगाकर जाना। कमज़ोरी, परेशानी आदि - इन बातों से बिल्कुल इनोसेन्ट, कमजोरी शब्द भी समाप्त होना है। इस ग्रुप का नाम कौन-सा है? सिम्पलिसिटी और प्योरिटी में रहने वाला ग्रुप। **जो सिम्पल होता है वही ब्युटीफुल होता है। सिम्पलिसिटी सिर्फ ड्रेस की नहीं लेकिन सभी बातों की। निरंहकारी बनना अर्थात् सिम्पल बनना। निरक्रोधी अर्थात् सिम्पुल। निर्लोभी अर्थात् सिम्पुल। यह सिम्पलिसिटी प्युरिटी का साधन है।**

➳ _ ➳ अच्छा। सलोगन क्या याद रखेंगे? कुमार जो चाहे सो कर सकते हैं। **जो भी बातें कहो वह "पहले करेंगे, दिखायेंगे, फिर कहेंगे"। पहले कहेंगे नहीं। पहले करेंगे, दिखायेंगे, फिर कहेंगे। यह सलोगन याद रखना।**

(11-03-1971)

➢➢ निरंतर आत्मिक स्थिति कैसे हो ?

➳ _ ➳ अमृतवेला, नुमशाम और सोने के समय को शक्तिशाली बनाइये

➳ _ ➳ सेवाओं के समय को योगयुक्त बनाइये

→ बीच बीच में छोटे छोटे योग के अभ्यास / ड्रिल कीजिये

■ धीरे धीरे यह **नेचुरल और नेचर** बन जाएगा

➳ _ ➳ सब कुछ संकल्पों की दृढ़ता और अभ्यास पर निर्भर करता है

➳ _ ➳ विशेष संकल्प

→ यह सब आत्माएं हैं

→ **यह आत्माओं की नगरी है**

➢➢ राजयोगी का चित्र

➳ _ ➳ एक तरफ - बुधी योग

→ बाबा की तरफ

→ भविष्य की तरफ

➳ _ ➳ दूसरी तरफ - भूत

→ विकार भाग रहे हैं

➢➢ लक्ष्मी नारायण का चित्र

➳ _ ➳ इस चित्र को बार बार देखकर

→ स्वयं में यह check कीजिये की

■ क्या यह हर्षितमुखता मुझ में हैं ?

■ क्या यह दिव्यता मुझ में हैं ?

■ क्या यह पवित्रता मुझ में हैं ?

➢➢ ड्रिल

➳ _ ➳ मैं आत्मा भ्रकुटी में विराजमान हूँ

➳ _ ➳ यह पुराना देह लुप्त हो गया है

➳ _ ➳ **अब मुझ आत्मा ने नया दैवी देह धारण कर लिया है**